P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मलिन बस्तियों में सामाजिक व स्वास्थ्य समस्यायें: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

कैलाश यादव
शोधार्थी,
समाजशास्त्र विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ, यू0पी0, भारत

सारांश

कोई भी सभ्य समाज गैरबराबरी, भेदभाव एवं सुविधाओं में दोहरे मानदण्ड को उचित सिद्ध करने का प्रयास नहीं करेगा। लेकिन भारत की राजनीतिक अर्थव्यवस्था ने मलिन बस्तियों में रहने वाले जनसमुदाय को समान नागरिक सुविधाओं से वंचित किया है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक विषमता स्थापित करने वाले तत्वों जो वंचित समुदाय में वंचना को बढ़ावा देते हैं, का विश्लेषण करना है। अध्ययन से पता चलता है कि असंतुलित एवं संस्तरणीय नगरीकरण तथा पूंजी के केन्द्रीयकरण का सामाजिक संरचना पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है एवं मलिन बस्तियों में रहने वाले समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आवास जैसी मूलभूत सुविधाओं को प्राप्त करने में जीवन समाप्त कर लेते हैं।

मुख्य शब्द : संस्तरणीय औद्योगिक विकास, पड़ोस, प्राकृतिक संसाधन, कुपोषण।

प्रस्तावना

तीव्र एवं अनियोजित नगरीकरण ने औद्योगिक विकास के साथ अवैध आवासीय कॉलोनियों, सुविधारहित नगरीय मलिन बस्तियों को जन्म दिया है। संस्तरणीय औद्योगिक विकास ने व्यक्ति और समुदाय स्तर पर संस्तरण में वृद्धि की है (कुमार, 2018: 35–39)। नगरीकरण की बढ़ती प्रवृत्ति ने समाज में अनेक जटिलताओं को जन्म दिया है। जहां एक ओर ग्रामीण आबादी का शिक्षा, रोजगार एवं स्वास्थ्य सेवाओं की तुलनात्मक रूप से बेहतर सुविधाओं की उपलब्धता के कारण नगरों के प्रति रूझान व प्रवास बढ़ा है वहीं दूसरी ओर इससे जुड़ी अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक व स्वास्थ्य समस्याओं का दबाव भी बढ़ा है। यही कारण है कि विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों के साथ ही समाजशास्त्रियों का ध्यान भी नगरीय समाज के अध्ययन की ओर गया है। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है कि नगर क्षेत्र की आबादी को सामाजिक, सांस्कृतिक एवं स्वास्थ्य के मुद्दों पर अध्ययन किया गया हो, क्योंकि समाजशास्त्र को एक विषयक्षेत्र की वैज्ञानिक धारा के रूप में विकसित करने वाले इमाइल दुर्खीम के शोध प्रबन्ध ''समाज में श्रम विभाजन'' में जिन सामाजिक जटिलताओं एवं विशिष्टताओं का वर्णन है वह नगरीय समाज के अध्ययन के लिए आज भी प्रासंगिक है।

वर्तमान समाज में नगरीय मलिन बस्तियां समाजवैज्ञानिकों के अध्ययन में प्रमुखता से स्थान ग्रहण कर रही हैं, फिर चाहे वह नागरिकों के आपसी रिश्तों, आजीविका के स्रोतों, शिक्षा की समस्या, मनोरंजन एवं रोजमर्रा के जीवन की सुविधाओं यथा– आवागमन, सड़क, बिजली, पेयजल की सुविधा, दूषित जल व कूड़ा निस्तारण के साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं आदि की ओर ध्यान आकर्षित किया है। कुछ समाज वैज्ञानिकों ने नगरीय क्षेत्र में होने वाले अपराधों पर भी अध्ययन करने का प्रयास किया है। अनिल कुमार (2018) ने राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों का विश्लेषण कर पाया कि नगरीय क्षेत्रों में होने वाली महिलाओं के विरूद्ध हिंसा का प्रमुख कारण संस्तरणीय औद्योगीकरण है। इस व्याख्या हेतु उन्होने ब्रानिस्लॉ मेलिनॉस्की द्वारा बतायी गयी सामाजिक जीवन के लिए सात मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के सन्दर्भ में भारतीय नगरों का विश्लेषण करते हुए नारी हिंसा में संस्तरणीय औद्योगीकरण एवं नव–उदारवादी आर्थिक व्यवस्था पर प्रश्न खड़ा किया है।

नगरीय क्षेत्र की स्वास्थ्य समस्याओं के अध्ययन के सन्दर्भ में सुजाथा वी. (2017: 299) का सटीक दिखाई पड़ता है कि किसी भी क्षेत्र के अध्ययन में सांस्कृतिक प्रतिमान, वहां के सूक्ष्म भेदों को खोल सकते हैं। यद्यपि आंकिक औसत एवं कथानक, स्वास्थ्य अध्ययनों के लिए अनुपूरक के रूप में सर्वोत्तम उपकरण माने जा सकते हैं, लेकिन यह एकमात्र उपकरण नहीं हो सकते हैं एवं समाजशास्त्र इन्हें प्रासंगिक विश्लेषण के रूप में उपयोग करता है। इस अध्ययन

में इन्हीं सांस्कृतिक प्रतिमानों के माध्यम से नगरीय मलिन बस्तियों की स्वास्थ्य समस्याओं का अध्ययन किया जा रहा है।

नगरीय समाज के अध्ययन की पृष्ठभूमि

समाजशास्त्र में नगरीय समुदाय पर अध्ययन की परम्परा पुरानी है। इसकी जड़ें टॉनीज के ''समुदाय एवं समाज'' (1887) के अध्ययन एवं इमाइल दुर्खीम के ''समाज में श्रम विभाजन'' (1893) के रूप में देखी जा सकती हैं। टॉनीज ने पूर्व औद्योगिक एवं औद्योगीकृत समाजों में मानव अन्तःक्रियाओं के प्रकारों पर चित्रण किया है। उनका तर्क है कि पूर्व औद्योगिक समाज की दुनिया परिवार, नातेदारी एवं पड़ोस के घनिष्ठ धागों से बंधी होती है। इस समुदाय (सरल/घनिष्ट समाज) (Gemeinschaft) में व्यक्ति एक दूसरे के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं। जबकि समिति (जटिल/आधुनिक समाज (Gesellschaft) की नगरीय दुनिया में सम्बन्ध व्यक्तिपरक, कार्य एवं निहित स्वार्थ पर आधारित होते हैं। इस समाज में सामुदायिक घनिष्ठता की भावना का अभाव पाया जाता है। इमाइल दुर्खीम सामाजिक सम्बन्धों को जटिल श्रम विभाजन के रूप में देखते हैं। वह तर्क देते हैं कि इस क्षेत्र में बहुत बढ़ी जनसंख्या अपनी उच्चस्तरीय कुशलता के आधार पर श्रम विभाजित होती है, जिसमें सामान्य मूल्यों के स्थान पर कुशलता पर आधारित एक दूसरे पर आश्रितता का भाव रहता है।

लेविस ऑस्कर ने अपनी पुस्तक (The Children of Sanchez, 1961) में मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों के प्रति मानववादी एवं भावनात्मक पहचान को प्रमुखता दी थी (Hoskins, Janet and Frank, Gelya 2007: 288)। कुछ वर्षों बाद हरबर्ट गैन्स ने (The Urban Villagers, 1962) पुस्तक में यह दर्शाने का प्रयास किया है कि नगरीय मलिन बस्तियों में रहने वाले पड़ोसियों के बीच गहरे आपसी सम्बन्ध स्थापित हो सकते हैं। वह अपने अवलोकन में पाते हैं कि साथी समुदाय अथवा साथी समूह/संस्थाएं आन्तरिक एवं बाहरी दुनिया से घनिष्ठता से जुड़े होते हैं, जिनमें पारिवारिक अथवा सम्बन्धात्मक एकजुटता से परे एकता का भाव देखा जा सकता है (Gafford, Farrah 2007: 5113)।

मलिन बस्तियों में सामाजिक व स्वास्थ्य समस्याएं

भेदभाव

भारतीय समाज में स्थापित जाति आधारित संस्तरणीय व्यवस्था, जिसमें अनुसूचित जातियों एवं अन्य पिछडी जातियों पर कठोर प्रतिबन्ध लगाकर सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक अधिकारों से वंचित किया जाता रहा है, जो नगरीय मलिन बस्तियों में भी कायम है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भी उन्हें अल्प मजदूरी, श्रम शोषण, असुरक्षा सहित पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है तो दूसरी ओर मीडिया एवं सामाजिक गतिशीलता के प्रभावस्वरूप भी वह अपने अधिकारों को प्राप्त कर पाने में सफल नही हो पा रहे हैं। समाज का कोई भी स्वरूप –सरल, जटिल, ग्रामीण अथवा नगरीय, विकसित अथवा विकासशील सभी समाजों में विभिन्न प्रकार के भेदभाव विद्यमान रहते हैं दुसरे शब्दों में कहें तो प्रत्येक समाज में सभी लोग समान नहीं हो सकते।

भारतीय समाज में जातिगत एवं लैंगिक विषमताएं प्रमुख एवं सर्वाधिक कठोर हैं। लैंगिक विषमता का तात्पर्य लिंग/जेण्डर के आधार पर स्त्रियों एवं पुरूषों में भेद से है। लैंगिक विषमता सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं जैविक आदि सभी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। कुछ विचारक इसे (लैंगिक विषमता को) सामाजिक व्यवस्था से जोड़कर देखते हैं, जो संस्थागत एवं सार्वभौमिक हैं। विकासशील एवं अविकसित देशों में स्त्रियों को समुचित शिक्षा का अवसर नहीं प्राप्त है, साथ ही सम्पत्ति में समानता के अभाव, सामाजिक, राजनैतिक परिदृश्य में शारीरिक निर्बलता का नाम देकर नारी शोषण आज भी कायम है। नगरीय मलिन बस्तियों में भी यह असमानता एवं भेदभाव कायम है। सामाजिक संरचना में विद्यमान यह भेदभाव अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ी जातियों के समस्त सदस्यों एवं विशेषतः महिलाओं को सामान्य नागरिक अधिकारों से वंचित करती हैं। इसलिए मलिन बस्तियों के निवासियों की स्वास्थ्य समस्याएं अधिक जटिल हैं।

हिंसा एवं अपराध

उदारीकरण के फलस्वरूप आर्थिक क्षेत्र में विशेषतः तृतीयक क्षेत्र में स्त्रियों की सहभागिता बढ़ने, रोजगार की कमी से पुरूषों पर आर्थिक एवं मनो–सामाजिक दबाव बन रहा है। वर्तमान में होने वाले इण्टरनेट, सोशल एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के अतिप्रयोग के परिणामस्वरूप महिलाओं एवं दलितों के प्रति हिंसा को बढ़ावा मिला है। इसने जहां एक ओर नृजातीय विषमता को बढ़ाया है वहीं दूसरी ओर महिलाओं की बढ़ती महत्वाकांक्षा भी नगरीय व उपनगरीय क्षेत्र में अपराध के लिए उत्प्रेरक का कार्य करती है (कुमार, 2018:43)। नगरीय मलिन बस्तियों में रहने वाले बहुत से सदस्यों के पास उनके नागरिकता प्रमाण भी उपलब्ध नहीं होते हैं। शिक्षा एवं रहन–सहन की निम्नता के कारण स्थायी व सम्मानजन रोजगार के अवसर नहीं मिलते हैं, जिससे इन क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के सभी सदस्य किसी न किसी अकुशल कार्यों में लिप्त रहते हैं जैसे –

महिलाएं व किशोरियां

घरों की साफ–सफाई, बर्तन साफ करने, कूड़ा बीनने आदि का कार्य करती हैं। औद्योगिक इकाईयों वाले शहरों में यह महिलाएं सिलाई, जरदोजी एवं अन्य कम आमदनी वाले कार्यों में भी लगती हैं। इस प्रकार के कार्यों के दौरान वह आर्थिक, शारीरिक, मानसिक एवं यौनिक हिंसा के जोखिम से रूबरू होती रहती हैं। कई बार शोषण एवं वंचना से बचने के कारण अथवा साथी समूह के दबाव में वह हिंसा एवं अपराध का रास्ता अपना लेती हैं।

बच्चे

घरों की साफ–सफाई, कूड़ा बीनने आदि का कार्य करते हैं। कुछ शहरों में बच्चे सिलाई कारखानों में धागा काटने, जरदोजी एवं अन्य कम आमदनी वाले कार्यों में भी लगते हैं। कई बार यह बच्चे बुरी संगति के कारण नशे, चोरी एवं यौनिक हिंसा में लिप्त हो जाते हैं, जिससे

वह जीवन की मुख्य धारा से जुड़ने से पूर्व ही समाज के विरूद्ध एक असामाजिक रास्ता अपना लेते हैं।

वयस्क पुरूष

भारी कार्य, कम आमदनी एवं नशावृत्ति के कारण मलिन बस्तियों में रहने वाले पुरूष पहले परिवार के बच्चों एवं महिलाओं के प्रति हिंसा करते हैं। बाद में उनके द्वारा हिंसा एवं अपराध पड़ोस एवं समुदाय से आगे बढ़कर कार्यक्षेत्र एवं सार्वजनिक स्थलों पर भी प्रकट होता है। यह हिंसा एवं अपराध उनके बच्चों में भी अपराधबोध का आभास कराता है।

अस्वच्छ वातावरण

मलिन बस्तियों के निवासियों को प्राकृतिक रूप से मिलने वाले संसाधनों पर भी समानता के साथ उपभोग का अधिकार नहीं जैसे–

पानी

प्राकृतिक रूप से मिलने वाला शुद्ध पेय जल भी यहां के निवासियों को नहीं मिलता।

हवा एवं सूरज की रोशनी

अति–जनघनत्व, छोटे आवास, संकरे रास्तों एवं जलनिकासी प्रबन्धन के अभाव में मलिन बस्तियों का वातावरण दूषित रहता है। यहां की हवा भी दूषित रहती है क्योंकि अधिकांश मलिन बस्तियां या तो अवैध बसी होती हैं अथवा गंदे नालों (जिनमें सीवेज बहता है) के किनारे बसी होती हैं। बिना किसी मानक के बने मकानों एवं झोपड़ियों में सूरज की रोशनी तक घरों के अन्दर नहीं पहुंचती है।

मिट्टी

प्राकृतिक रूप से शरीर को सभी तत्वों की आवश्यकता होती है, लेकिन मलिन बस्तियों में पार्क, एवं खेलकूद के मैदानों का अभाव होता है। जिससे यहां के निवासियों को प्रकृति से मिलने वाली स्वच्छ मिट्टी भी नहीं मिल पाती।

कुपोषण

भारतीय समाज में कुपोषण न केवल एक स्वास्थ्य व पोषण की समस्या है, अपितु यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्या है। सामाजिक इसलिए क्योंकि निम्न जातियों में कुपोषण की दर अधिक है, जाति भारत की पहचान है। सांस्कृतिक इसलिए क्योंकि यहां जन्म से पूर्व तथा मृत्यु के पश्चात सभी कार्यकलापों पर धार्मिक प्रभाव होता है। धार्मिक मान्यताओं के कारण माताएं जन्म के तुरन्त बाद बच्चे को स्वयं का दूध न पिलाकर गाय, बकरी का दूध अथवा शहद का सेवन कराती हैं। महिलाओं एवं किशोरियों के साथ खानपान, शिक्षा एवं अन्य सरोकारों में लिंग भेद के कारण कुपोषण की निरन्तरता बनी रहती है। राजनीतिक इसलिए क्योंकि हमारे समाज में नेता सामान्य जनता एवं विशेषतः गरीब परिवारों को दोयम नागरिक बनाये रखना चाहते हैं। तरह–तरह की लोक–लुभावन नीतियों को भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ाकर समाज को भुखमरी की ओर धकेल रहे हैं। आर्थिक समस्या यह है कि कुपोषित बच्चे समाज में कम बुद्धिमान, कम–उत्पादक एवं कम आमदनी वाले होते हैं। बेन्टले एवं अन्य (2015) ने मुम्बई की अनौपचारिक बस्तियों में नवजात शिशुओं एवं बच्चों के खानपान पर अध्ययन में पाया कि यहां के निवासी अत्यधिक चीनीयुक्त, तले–भुने एवं नमकीन पदार्थों को अल्प आयु से ही बच्चों को देने लगते हैं, साथ ही फलों, सब्जियों एवं कन्द आदि से मिलने वाले पोषक तत्वों का अभाव रहता है, जो एक ध्यान देने का विषय है।

स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव

मलिन बस्तियों में निवास करने वाले लोगों को सामान्य नागरिक सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है। जैसे– सन् 2017 से पूर्व नगरीय क्षेत्रों में आशा कार्यकताओं की नियुक्ति नहीं थी, यहां तक कि वर्तमान में भी ग्रामीण आशा कार्यकताओं की तुलना में नगरीय आशा की कम दृश्यता प्रकट होती है। सरकारी स्वास्थ्य सुविधाएं मलिन बस्तियों से दूर होने के साथ दिन के समय मिलती हैं, जिससे दैनिक मजदूरी, घरों में काम करने वाले अथवा अन्य कार्यों में लिप्त निवासियों को निःशुल्क मिलने वाली सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ नहीं मिल पाता। निजी एवं झोलाछाप चिकित्सा कर्ताओं से उन्हें सटीक इलाज नहीं मिलता, जिससे वह सामान्य स्वास्थ्य समस्या को जटिल बना लेते हैं। इस प्रकार यहां के निवासियों की स्वास्थ्य समस्याएं एवं स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव निन्तर जारी रहने वाली समस्या बनी हुई है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

नगरीय मलिन बस्तियों में निवास करने वाले लोगों को सभी नागरिक सुविधायें समान रूप से मुहैया नहीं हो पा रही हैं। इसके कारण आर्थिक से अधिक सामाजिक व सांस्कृतिक हैं क्योंकि इन मलिन बस्तियों में निवास करने वाली अधिकांश निम्न जातियां, अशुद्ध व अल्पआय वाले पेशों से जुड़ी होती हैं। नाले तथा गटर की सफाई वाले हों अथवा कूड़ा इकट्ठा करने वाले सभी इसी समुदाय से आते हैं। यहां तक कि जिन लोगों ने पूर्व में सामाजिक कुरीतियों से बचने के लिए इस्लाम कबूल किया होगा वह आज कूड़ा बीनने वाले बन गये हैं। नातेदारी एवं विवाह रूपी संस्थाओं द्वारा परिवार व समाज में आर्थिक रूप से कमजोर परिवार की महिलाओं को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में लिंग विभेदीकरण की दोहरी तलवार लटकती रहती है। नगरीय मलिन बस्तियों की महिलाओं में ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा गतिशीलता एवं अर्थिक स्वतंत्रता में वृद्धि हुई है। वह मानती हैं कि सरकारी, गैर–सरकारी प्रयासों एवं कानूनी प्रावधानों ने नारी सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। किन्तु सामाजिक कुरीतियों, बलात्कार एवं स्वास्थ्य समस्याओं के कारण उनके जीवन में कठिनाइयों का दौर जारी है।

लोकेश अग्रवाल एवं अन्य (2014:13122) ने आगरा नगर की मलिन बस्तियों में किये गये अध्ययन के आधार पर यह सलाह दी है कि स्वास्थ्य एवं पोषण की समस्या दूर करने हेतु घर में भी महिलाओं को सशक्त बनाने की आवश्यकता है, जैसे– साक्षरता स्तर, कम–कीमत में संतुलित आहार, के लिए भोजन उपभोग प्रतिमानों में बदलाव आदि को अपनाना होगा, इससे कुपोषण के स्तर में सुधार होगा। समाज में व्याप्त गैरबराबरी जो कि जाति, धर्म, लिंग अथवा आयु के आधार पर को संवैधानिक रूप से समाप्त किया जा चुका है,

जिसे सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से समाप्त किया जाना चाहिए तभी भारतीय समाज में सतत् विकास सम्भव हो सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कुमार, अनिल (2018) महिलाओं के विरूद्ध अपराध : भारत में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रभावों का विश्लेषण, शोधमंथन, खण्ड–09, अंक: 01.

Agarwal, Lokesh, et. al. (2014) Current Status of Nutrition among under Five Children of Slum Areas of Agra. Journal of Evolution of Medical and Dental Sciences; Vol. 3, Issue 58, pp- 13120-13125, DOI: 10.14260/jemds/2014/3744.

Bentley, Abigail et. al. (2015) Malnutrition and infant and young child feeding in informal settlements in Mumbai, India: findings from a census, Food Science & Nutrition Vol. 3, No. 3; pp 257–271; doi: 10.1002/fsn3.214.

Dean, H. & Taylor-Gooby, P. (1992) Dependency Culture: The Explosion of a Myth. Harvester Wheatsheaf, Hemel Hempstead.

Durkheim, E. (1893/1997). The Division of Labor in Society, New York: Free Press.

Gafford, Farrah (2007) Urban Community Studies, (ed. Ritzer 2007), Blackwell Encyclopedia of Sociology, Oxford, Blackwell Publishing Ltd.

Hoskins, Janet and Frank, Gelya (2007) Biography, in (ed. Ritzer 2007), Blackwell Encyclopedia of Sociology, Oxford, Blackwell Publishing Ltd.

Park, Robert E. and Burgess, Ernest (1929) The City, Chicago: University of Chicago Press.

Sujatha, V. (2017) What Is the Sociology behind Health Status and Health-seeking Behaviour? Sociological Bulletin, Vol. 66, No. 3, 286–301.

Suttles, Gerald (1968) The Social Order of the Slum: Ethnicity and Territory in the Inner City. Chicago: University of Chicago Press.

Tonnies, F. (1887/1957) Community and Society (Gemeinschaft und Gesellschaft), Martino Fine Books.

Wilkinson, R. (1996) Unhealthy Societies: The Afflictions of Inequality, New York, Routledge.

Whyte, William (1943) Street Corner Society, Chicago: University of Chicago Press.

Zorbaugh, Harvey W. (1929) The Gold Coast and Slum: A Sociological Study of Chicago's Near North Side, Chicago: University of Chicago Press.